पत्रिका

राजस्थान पत्रिका

rajasthanpatrika.com | patrika.com

8th February 2016

नवाचार ◆ तमिलनाडु वन अनुसंधान केंद्र ने किया सफल प्रयोग

मिट्टी-पानी के बिना पौधा होगा तैयार

प्रशांत राघवन .कोयम्बतूर @ पत्रिका

patrika.com

न तो मिट्टी और न ही बार-बार पानी डालने की जरूरत और 3 से 6 महीने में पौधा तैयार। 6 माह तक इसे पानी देने की जरूरत ही नहीं है। फिर पौधे को अन्यत्र रोपित कर इसके विकास को बेहतर बनाया जा सकता है। यह प्रयोग वन आनुवांशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान कोयम्बतूर (आईएफजीटीबी) ने किया। 2 फरवरी को निजी दौरे पर आए केंद्रीय पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावडेकर ने इस उत्पाद को लांच भी किया। महाराष्ट्र वन विभाग ने इस नए उत्पाद को बनाने का ऑर्डर भी आईएफजीटीबी को दे दिया है। इस नए उत्पाद की खासियत यह है कि यह पूरी तरह से जैविक खाद है।

बहरहाल, आईएफजीटीबी ने इस नई खोज को वर्मिको-आईपीएम नाम दिया है। यह किसी भी बीज या नन्हें पौधे के शुरुआती विकास को बेहतर बनाएगा। इसके बाद इस पौधे को अन्यत्र रोपित करके इसकी सामान्य तरीके से देखभाल की जा सकती है। इस खोज को अंजाम देने वाले आईएफजीटीबी के वैज्ञानिक डॉ. एस. मुरुगेशन और डॉ. एन. सैंथिल कुमार ने बताया कि इस नवीन खोज को केंचुए की खाद, नारियल की जटा और गोबर को मिश्रित करके बनाया गया है।

कोयम्बतूर के आईएफजीटीबी में बनाया गया उत्पाद वर्मिको-आईपीएम व इसी उत्पाद के उपयोग से तैयार हुआ पौधा।

पौधे की ऊंचाई 3 महीने में डेढ़ फीट

वैज्ञानिकों ने बताया कि वर्मिको-आईपीएम में बीज या नन्हें पौधों को विकसित करने के ज्यादा गुण हैं। यह पौधे को 2 से 3 महीने में करीब डेढ़ फीट तक बढ़ा कर देता है। इसे फूलों में या सब्जियों की खेती में भी उपयोग में ला सकते हैं। वर्मिको-आईपीएम को टिकियानुमा आकार में मोटे रूप में बनाया गया है। वर्मिको की टिकिया की लंबाई और चौड़ाई 6 सेंटीमीटर है। एक टिकिया की कीमत पहले जो 4.50 रुपए आती थी, अब वर्मिको-आईपीएम के रुप में नए उत्पाद बनाए जाने से 2.50 रुपए ही आ रही है। वैज्ञानिक बताते हैं कि 1 किलो वर्मिको-आईपीएम के मिश्रण से 20 टिकिया बनाई जा सकती हैं।

क्या है तरीका

वैज्ञानिकों ने बताया कि वर्मिको-आईपीएम की एक टिकिया में करीब 350 मिलीलीटर पानी धीरे-धीरे और रुक-रुककर डाला जाता है। प्रयोग में 350 मिलीलीटर तक पानी डालने का स्टैण्डर्ड तक किया गया था। पानी डालते रहने से टिकिया धीरे-धीरे 6 सेंटीमीटर से 12 सेंटीमीटर की ऊंचाई तक पहुंच जाती है। टिकिया पूर्व में कठोर होती है जो पानी डालने के बाद ढीली हो जाती है। इसके बाद इसमें बीज या नन्हें पौधे को लगाया जाता है। इसकी खासियत यह है कि इसके बाद पौधे में 6 महीने तक न तो पानी देने की जरूरत है और न किसी प्रकार के कोई खाद की। वर्मिको में इतनी नमी होती है कि वह लंबे समय तक कायम रहती है। 2 से 3 महीने में ही पौधे की ऊंचाई में 30 से 40 प्रतिशत तक बढ़ोत्तरी हो जाती है। कुछ 3 महीने में और कुछ पौधों को 6 महीने में ही हम अन्यत्र लगा सकते हैं।

नर्सरी के लिए बेहतर

वर्मिको-आईपीएम उत्पाद का उपयोग नर्सरी में या टैरेस गॉर्डन में उगाए जाने वाले पौधों के लिए मुख्य रुप से किया जाता है। वैज्ञानिक बताते हैं कि हम इसका उपयोग अपनी नर्सरी में कर रहे हैं। वही इस उत्पाद को हमारी रेंज के अन्य विभागों में बड़ी आसानी से ले जा सकते हैं। इससे विभाग का परिवहन का खर्चा कम हुआ है।

किसानों ने भी की सराहना

इस नए उत्पादों का उपयोग किसानों ने भी किया और सराहना की। मुसीरी के किसान एसी पुघलेंदी 5 एकड़ जमीन पर टमाटर और मिर्ची उगाते हैं। उसमें इस वर्मिको-आईपीएम का उपयोग किया। पुघलेंदी ने कहा कि बेहतर उत्पाद है और यह मैं दूसरी बार उपयोग में ले रहा हूं। इसी तरह पोल्लाची के किसान राधाकृष्णन इस उत्पाद को अपनी नर्सरी में उपयोग कर रहे हैं। विभाग के इस प्रयोग की

डॉ. एस. सैंथिल कुमार, डॉ. एस. मुरुगेशन

कोयम्बतूर के अलावा तिरुनेलवेली, मदुरै, तिरुपुर के किसानों ने भी सराहना की है।

मामूली लागत

आईएफजीटीबी वनों में स्थित विभिन्न प्रजातियों के वृक्षों की उत्पादकता में सुधार का काम करता है। वहीं वनों में बेहतर किस्म के वृक्षों को भी लगाता है, जिससे वनों में ये वृक्ष लंबे समय तक अपना जीवनयापन कर सके और वन्यजीवों व पक्षियों के लिए भी मददगार साबित हो सकें। हम इसलिए ऐसी नवीन खोज कर रहे हैं जिससे कम लागत में हम बेहतर उत्पाद किसानों को दे सकें।

आरएस प्रशांत
निदेशक, आईएफजीटीबी